ॐ

चौरासी छैद्दम

(स्तोत्र)

'शहन्शाह'

उ/329

चौरासी छेदन

स्तोत्र

—म० शाहन्शाह

१७वाँ संस्करण ५०००   मूल्य)

सन् १९४० ई०

मिलने का पता—
श्रीशाहन्शाही सर्वहितकारी संघ
पो० बाक्स ४७, लालबाग़ रोड, लखनऊ

सर्वाधिकार स्वरक्षित

मुद्रक—
श्रीदुलारेलाल भार्गव
गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

ओ३म्

प्रस्तावना

श्री'चौरासी छेदन' स्तोत्र का सत्रहवाँ संस्करण श्रद्धालु साधकों और भगवद्भक्तों के सम्मुख उपस्थित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष है। इस मंत्रमय स्तोत्र के द्रष्टा सत्यमूर्ति श्रीशाहन्शाहजी महाराज के कोष से ये अप्राप्य और अमूल्य आध्यात्मिक रत्नों की लड़ियाँ लुटाई जा रही हैं। सुमधुर ध्वनिकारी करुणा-सुधा-पूर्ण इस अखंडानन्द-घन से शांति और सुखप्रदायिनी परमानंद-दायिनी वर्षा हो रही है, जिससे भव-भय-भीति से संतप्त आत्मायें शांति और आश्वासन प्राप्त करती हैं। आनंद की लहरें तरंगित हो रही हैं। इसमें वे सभी बड़भागी हिलोरें लेते हैं, जिनको

सौभाग्यवश यह स्तोत्र-रत्न प्राप्त होता है। ऐसा आस्तिक समुदाय प्रतिदिन अति शीघ्रता से वढ़ता ही जा रहा है। अन्यथा इस स्तोत्र-रत्न के सोलहवें संस्करण के कुछ ही महीनों बाद इस सत्रहवें संस्करण की आवश्यकता न पड़ती।

प्रत्यक्ष में प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं होती। शाहन्शाही दरवार से तो 'आज लौं कोऊ निराश फिर्यो नहिं, आर्त ह्वै जानें पुकार सुनायो" (शंकर)॥ धन्य भगवान्।

उपरोक्त तत्त्व और मर्म पंद्रहवें संस्करण के 'प्राक्कथन' से निम्नलिखित उद्धरण से विदित होता है:—

मस्त पुरुषों के भजन और वाणी में बिजली-सा चमत्कार रहता है, जो भक्तों के चित्त पर गहरा प्रभाव डालता है। और उन्हें साधन-मार्ग में

प्रकाश देता रहता है। इस प्रकार के भजन-स्तोत्र शब्दों के तोड़-फोड़ से नहीं बना करते हैं। बल्कि वे आनन्द की लहरों में स्वतः उमड़ चलते हैं और सिद्ध किये हुए अचूक मंत्रों की भाँति लक्ष्य प्राप्ति में सहायक होते हैं।

यह बड़े सौभाग्य की बात है कि शाहन्शाही फ़र्मान से इस संस्करण में दो विशेषतायें कर दी गई हैं। पहली यह है कि इस मंत्रमय स्तोत्र में परमात्मा के अष्टोत्तरशत (१०८) स्वभावों का जो इसमें 'विश्व' से 'ईश' तक 'सूत्रे मणिगणा इव' गुम्फित हैं, स्पष्टीकरण प्रत्येक नाम के बाद अंकों द्वारा कर दिया गया है। दूसरी विशेषता यह है कि उन श्रद्धालु पाठकों के लिये जिनको इस स्तोत्र के समझने में कहीं-कहीं कुछ कठिनता प्रतीत होती है। कठिन शब्दों और वाक्यों के अर्थ पाद-टिप्पणी में दे दिये गये हैं। क्योंकि यह

अभ्रांत सिद्ध है कि विना उसके आशय को समझे स्तोत्र या मंत्र का सेवन पूर्ण लाभप्रद नहीं होता।

इस बार भी पिछले संस्करण में दिये हुए प्रायः सभी भजन सम्मिलित रक्खे गये हैं और कुछ नवीन भजन भी सम्मिलित कर दिये गये हैं। इनके गान से अपूर्व आनंद मिलता है और मानसिक शक्ति विकसित और दृढ़ होती है।

अंत में जिज्ञासुओं की आध्यात्मिक पिपासा की निवृत्ति के उद्देश्य से श्रीमहाराजजी के धार्मिक ग्रंथों का परिचय भी दे दिया गया है।

हरदोई
आषाढ गुरुपूनो
संवत् १९९७

द्वारकाप्रसाद शुक्ल
(सिविल ऐण्ड सेशन्स जज़)
उपसभापति
शाहन्शाही सर्वहितकारी संघ
लखनऊ

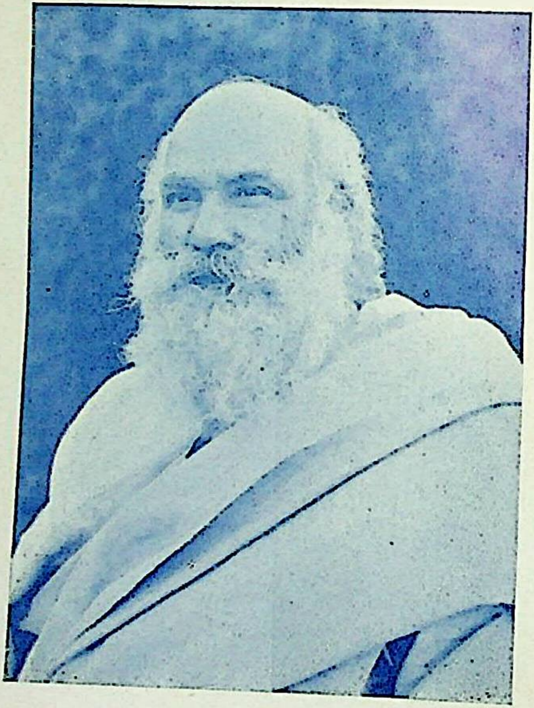

महात्मा शहन्शाह

भूमिका

जो आदमी नित्य कोई भजन-पूजन नहीं करता, वह उस मनुष्य के समान है, जो कि भोजन तो प्रतिदिन करता है परन्तु उसका पाचन नहीं करता। भजन वह आत्मिक चूर्ण है, जिससे जन्म-जन्मान्तर के पापों का नाश होकर तत्त्वज्ञान की प्राप्ति होती है। चूर्ण के अतिरिक्त भोजन पचाने के लिये और भी उपाय हैं, जैसे व्यायाम, चलना, फिरना, दौड़ना श्रम इत्यादि। यदि इनमें से कोई कार्य भोजन करने-वाला आदमी न करे, तो समझ लो कि शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो जायगी और जितने दिन जियेगा अस्वस्थ रहेगा। इसी प्रकार भजन न करनेवाले की आत्मिक मृत्यु शीघ्र हो जाती है, क्योंकि बुरे-

भले कर्म-रूपी भोजन तो मनुष्य नित्य करता ही है, पर उसके पचाने का कोई उपाय नहीं करता।

शारीरिक और आत्मिक मृत्यु में कुछ भेद है। वह यह है कि शारीरिक मृत्यु में तो शरीर बिलकुल अचल हो जाता है, पर आत्मिक मृत्यु में शरीर और मन निरंकुश और बहुत ही चलायमान हो जाते हैं। शारीरिक मृत्यु में शरीर के दुखों की समाप्ति हो जाती है, परन्तु आत्मिक मृत्यु में और उसके पीछे शरीर और मन को ही अधिक से अधिक कष्ट भोगने पड़ते हैं, क्योंकि आत्मा तो निर्लेप और निर्विकारी ही है।

यह भी एक अद्भुत बात है कि आत्मा न तो जन्मता है न मरता है, न सुखी है न दुखी, परन्तु इसके साथ मिले हुए शरीर और मन को यह सब द्वन्द्व सताते हैं। हाँ, जो मनुष्य इस बात का अनुभव करता रहे तो उसे शरीर और मन सहित

भी कुछ खेद नहीं होता। ऐसा अनुभव सिद्ध होने के और भी बहुत से उपाय हैं, जिनका उल्लेख इस छोटी-सी भूमिका में असम्भव समझकर केवल एक ही उपाय बतलाते हैं, और वह भजन करना है। भजन करने के कई भेद हैं, उन सब भेदों में सर्व साधारण के लिये ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना ही एकमात्र सरल और सुगम उपाय है।

सब जानते हैं कि जिसके सहचारी या कुटुम्ब सहमत न हों तो उसका हर समय नाक में दम रहता है। सहमत होने के तीन उपाय हो सकते हैं—पहिला उपाय यह है कि अन्य सब उसके अधीन हो जावें, दूसरा यह है कि वह स्वयं उनके अधीन हो जावे, और तीसरा उपाय यह है कि सब पृथक् पृथक् हो जावें। अस्तु जीवात्मा, मन, बुद्धि इत्यादि सब सहचारी हैं, परन्तु यह सब साधारणतया सहमत नहीं होते इसलिये दुखित

हैं। इस दुःख को दूर करने का तीसरा उपाय ही सबसे श्रेष्ठ है, क्योंकि पहले दो तो कभी अत्यन्ततः नहीं हो सकते। इसी तीसरे उपाय को महात्माओं ने मुक्ति कहा है और उसके दो साधन हैं—भक्ति और ज्ञान। अस्तु ? भक्ति साधन सर्व-साधारण के लिये मुख्य और सुलभ है।

भक्ति के साधन के लिये सबसे बड़ा उपाय विनय-प्रार्थना करना है। सो उसी विनय-प्रार्थना की यह छोटी सी पोथी जिसका मुख्य अङ्ग मोटे अक्षरों में लिखी ८४ चौपाइयाँ हैं, आपके हस्तगत होती है। यदि इसका एक या अधिक बार दत्त·चित्त होकर नित्य पाठ किया जावे, तो निस्संदेह मुक्ति और भक्ति दोनो प्राप्त हो जावेंगी।

इन चौरासी चौपाइयों के प्रादुर्भाव होने का भा कुछ ईश्वर-कृत योग ही हुआ, क्योंकि न तो इनके वनने के पहिले यही विचार था कि केवल चौरासी

चौपाई अलग पुस्तकाकार छपाई जावें और न पैग़ामे शाहन्शाह नामी पत्रों में बहुत काल तक छपने के पीछे इनकी गणना की गई। हाँ, बहुत से सज्जनों को इनका नित्य पाठ करते देखा और सुना कि इसके पाठ से उन्हें बहुत लाभ हुआ। इनकी गिनती की गई तो पूरी चौरासी निकली। फिर यह समस्या पूर्ण हुई कि ये केवल चौरासी काटने के निमित्त नित्य पाठ के लिये ही बनी हैं। इसलिये इनको स्वतन्त्र छपवाया गया।

इसके छपने से एक और भी कमी पूरी हुई, वह यह कि हिन्दी-प्रेमी जनता में पहिले कोई ऐसा भाषा-स्तोत्र नहीं था, जिसका पाठ आस्तिक, सर्व साधारण नित्य नियम-पूर्वक समझकर कर सकें, क्योंकि यह मत-मतान्तर के झगड़ों से रहित है। इसका पाठ प्रायः सभी सज्जन कर सकते हैं, चाहे

वह किसी मत के हों, हमारे विचार में ईश्वर और आपस के प्रेम की प्राप्ति का एकमात्र और नाम रूप यह स्रोत है।

शाहन्शाह

भजन-सूची

संख्या		पृष्ठ
१—श्रवण मनन निदिध्यासन	...	४१
२—गुरु बिन भेद न पावे हरि का	...	४१
३—जागो रे मनुवा	...	४२
४—हर हर जप नित ...	...	४२
५—यह जन्म तुझे अनमोल मिला	...	४३
६—कौन उपाय मिलें ...	...	४५
७—जगदीश ईश प्यारे ...	...	४६
८—प्रभु कैसे तुम्हें हम पायें ...	...	४७
९—कहाँ हूँ कहाँ नाहीं ...	....	४८
१०—सदा दिल जो उससे लगाता	...	४९
११—डरते किस वास्ते हो ...	...	५०
१२—बातों बातों में तेरा वक्त	...	५१
१३—ताबके दुनिया की दौलत	...	५२
१४—मरने से पहिले अगर ...	...	५३
१५—जिस जा कि हमने देखा...	...	५५
१६—पीर बिन हरी न जाये पीर	...	५६

१७—हे प्रभू हम पर दया ५७
१८—हरदम मगन रहो ५८
१९—हम ऐसे देस के बासी हैं ... ५९
२०—बम बम बम नटवर ६०
२१—प्रभु तुम बिन कौन ६१
२२—काहे धरत नहिं धीर ६२
२३—एक पल भर सुख नींद ६२
२४—कहाँ है राम अपना ६३
२५—निस दिन तरसत नैन ६४
२६—हर सो नाहिं चले चतुराई ... ६४
२७—भजो रे मन राम नाम ६५
२८—रे मन, अपनो भवन ६६
२९—मन, चेत चेत अब ६७
३०—मन, आजा हरि शरणाई ... ६८
३१—साधो जग दर्शन का मेला ... ६९
३२—न सुख को है क़रार ७०
३३—ओ३म् जै हरता करता ७२

शहन्शाही नियम

(१) प्रत्येक समय प्रसन्न रहना यही सबसे बड़ा परमात्मा का स्मरण तथा उपासना है। याद रक्खो, प्रसन्न वही रह सकता है, जो प्रत्येक कर्म को ईश्वर-अर्पण करके निष्काम भाव से रहे। सकाम रहकर दुःख में रहने का कारण यह है कि फल लेने और देनेवाला मनुष्य अपने आपको समझता है। वस्तुतः फल देनेवाला ईश्वर ही है।

(२) किसी काम के करते समय टालमटोल और संशय में नहीं रहना चाहिये। ऐसा करने से न तो सफलता होती है और न प्रसन्नता रहती है और बल भी अधिक खर्च होता है। हाँ, किसी

कार्य को आरम्भ करने से पहिले खूब सोच-विचार कर लेने में हानि नहीं। परन्तु सोच सोच में ही न रहे। विशेषकर शुभ कार्य के लिये सोच वृथा ही है, सांसारिक और बुरे कार्य में सोच से काम लेने की आवश्यकता है। याद रहे कि बल मनुष्य का मनुष्यत्व है, उसे ऐसी जगह वर्तना चाहिये कि उसमें बृद्धि हो, हानि न हो। विचार एकान्त स्थान पर होना चाहिये। विचार से तात्पर्य अपनी शक्तियों को एक विन्दु पर लगाने का है।

(३) जहाँ तक हो सके झगड़ों को समाप्त करने को उद्यत रहे, आरम्भ करने को नहीं क्योंकि यह प्राकृतिक नियम है कि जब किसी आदमी ने भूल से कोई झगड़ा आरम्भ कर दिया या स्वतः ही हो गया तो उसकी हार्दिक इच्छा, यही रहती है कि इसकी समाप्ति हो जावे तो अच्छा है। मूर्ख और बुद्धिमान् में इतना ही

भेद है कि मूर्ख एक झगड़े का अन्त चाहता है परन्तु ज्यों ही वह समाप्त हुआ कि दूसरा शुरू कर देता है। और बुद्धिमान् किसी पहिले झगड़े के समाप्त होने से पहिले अन्यान्य सब झगड़ों की ही समाप्ति कर देता है, आरम्भ करना तो सम्भव ही कहाँ ?

(४) सदा सच बोलो परन्तु सच बोलने से पहिले सच और झूठ के भेद को भली प्रकार जान लेना चाहिये। यह उस समय तक नहीं हो सकता जब तक कि किसी सच्चे आदमी के संग में न रहा जावे। ऐसे पुरुष का सत्संग जिस भाव मिले सस्ता है। क्योंकि सांसारिक सौदे का मूल्य दे देने पर भी सांसारिक सौदा नाश या हानि की ओर ले जाता है, परन्तु यह सौदा उसे झूठ में से और उसमें से झूठ सदैव के लिये निकाल देता है, सच और झूठ के भेद करने को ही ज्ञान या विवेक कहते हैं।

(५) मन, वचन और कर्म को सदैव एक रक्खे। ऐसा अमल करने से उसे अमली जीवन में आने का समय शीघ्र से शीघ्र मिल जावेगा। प्रायः ऐसे आदमी देखने में आते हैं, जो एक बात को आयु भर कहते रहते हैं, और चाहते भी हैं कि उस पर धारणा की जावे, परन्तु ऐसा करते नहीं। इसका कारण उनका इस नियम को न समझना है।

(६) प्रातः सायं दोनो समय एक आसन पर दृढ़ बैठकर ईश्वर के ध्यान में लीन रहने का अभ्यास करो। ऐसा करने से अभ्यासी में ईश्वर के गुणों का संचार होगा। ईश्वर सत्, चित् और आनन्द है। इसी को ब्रह्म कहते हैं। ऐसे अभ्यास का नाम ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य का अर्थ ही ब्रह्म में विचरना या लीन रहना है। और वह तभी हो सकता है, जब सब प्रकार के विषयों से मुक्त रहे।

(७) विषयों के अतिरिक्त किसी को शत्रु न

समझो। और मन को वश में रखने के अतिरिक्त मित्र नहीं समझना चाहिये।

(८) खान, पान, वस्त्रादि स्वच्छ और सादा रक्खो। खाने का समय वही है, जिस समय अच्छी भूख लगे।

(९) किसी को अपना न समझो। हाँ, जो कोई तुम्हें अपना समझे उसकी भलाई को दृष्टिगोचर रक्खो। ऐसा करने से यह आवश्यक नहीं कि अन्य सबको पराया या ग़ैर ही समझे। बर्ताव से शत्रु भी मित्र हो जाता है।

(१०) अपना कोई विचार और कर्म ऐसा न होवे जिसका फल अपने या दूसरे के लिये दुःख हो।

(११) माता, पिता, वृद्धों और अतिथियों की सेवा तन, मन, धन से करो। हाँ, यदि ऐसा करने से ईश्वर या सच्चाई के मार्ग में रुकावट हो तो इसके विपरीत कर सकते हैं, परन्तु इस

बात का निश्चय ब्रह्मवेत्ता महात्मा से कर लेना चाहिये।

यथाशक्ति दान, व्यायाम, शौच, स्वाध्याय और निर्बलों की सहायता—ये उपनियम हैं।

ओ३म्

स्तोत्र-विभाग

॥ दोहा ॥

विश्वभरन[1] मंगलकरन[2],
अज्ञ—विज्ञ—भरतार[3]।
शुद्ध[4] बुद्ध[5] [1] कल्याणकर[6],
[2] भवभयभीत – कुठार[7] ॥ १ ॥
जल थल पवन अकाश में
तुमरो है परकाश।

---

१. विकसित ज्ञानवाले। २. संसार के भय को नाश करनेवाले।

तुम्हरी कृपा - कटाक्ष से
सकल दुःख हों नाश ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

कृपाशील[1] [8] करुणायक[2] [9] स्वामी [10] ।
दया-निकेतन[3] [11] अन्तरयामी[4] [12] ॥ १ ॥
ऋद्धि सिद्धि नौ निद्धि के दाता [13] ।
सबके तात भ्रात पितु माता [14] ॥ २ ॥
करुणामय[5] [15] प्रीती के सिन्धू [16] ।
पतित-उद्धारक [17] दीनन-बन्धू [18] ॥ ३ ॥

---

१. कृपा करना जिनका स्वभाव ही है। २. दयालु। ३. दया के घर। ४. औरों के मन की बात जान लेनेवाले। ५. दयारूप।

राग[1] द्वेष[2] और मोह[3] से पारा १९ ।
सब में रहकर सब से न्यारा २० ॥४॥
जीवन मरण रहित २१ निसप्रेहा[4] २२ ।
द्वन्द्वातीत[5] २३ अगम्य[6] २४ अदेहा[7] २५ ॥५॥
रक्षक २६ पोषक २७ सब के साँईं २८ ।
काम क्रोध मद मत्सर[8] नाहीं ॥६॥
अजर[9] २९ अरुअमर[10] ३० अवध ३१ अविनाशी[11] ३२
दुःखविनाशक ३३ सुख की राशी[12] ३४ ॥७॥

---

१. अति अधिक चाह। २. वैर और विरोध। ३. भ्रम के कारण अत्यंत प्रेम। ४. इच्छा-रहित। ५. सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी इत्यादि विरोधी जोड़ों के प्रभाव से बाहर। ६. जहाँ कोई जा न सके। ७. देह-रहित। ८. परसंताप ९. न बुढ़ानेवाले। १०. न मरनेवाले। ११. जो बँधा न हो। १२. ढेर।

प्रेम भक्ति और मुक्ति[१] प्रदाता [३५] ।

जगत्राता [३६] करतार [३७] विधाता [३८] ॥ ८ ॥

आदि अन्त और मध्य समाना [३९] ।

अतुलित बल[४०] और तेजनिधाना[२] [४१] ॥ ९ ॥

भक्तन[३] - कमल - पुंज-के-भौंरा [४२] ।

सन्तन सहत[४] न करत निहोरा ॥१०॥

मान[५] अरु मद[६] मरदक भक्तन के [४३] ।

काम क्रोध नाशक सन्तन के [४४] ॥११॥

---

१. सब बंधनों से छुटकारा । २. पात्र, बर्तन । ३. भक्तों के षट् चक्रों के कमलों में भौंरा की तरह विहरनेवाले । ४. से । ५. अभिमान । ६. अहंकार ।

सुर हितकर [४५] असुरन संहारी [४६] ।
दीनदयालु [४७] पतित उद्धारी [४८] ॥ १२॥

॥ दोहा ॥

विमल[१] [४९] अमल[२] [५०] निर्मल[३] [५१] सुभग[४] [५२],
तारन-तरन[५] [५३] सुजान [५४] ।
निर्धन धन [५५] बल [५६] बुद्धि तुम [५७]
निर्बल [५८] शक्ति महान[६] [५९] ॥ ३ ॥

आदि-जुगादि[७] [६०] चराचर[८]-स्वामी [६१] ।
सब के मीत [६२] अनाम[९] [६३] अकामी[१०] [६४] ॥ १३ ॥

---

१. जिसके मल दूर हो गये हों। २. मल-रहित । ३. जिसमें से मल निकल गये हों। ४. सुन्दर ५. पार जानेवाले को पार लगाने-वाले। ६. बड़े से भी बड़े । ७. सबसे पहले जुग का प्रारंभ। ८. जड़ और चेतन। ९. बिना नाम के १०. इच्छा-रहित।

ऋषी मुनिन योगिन आधारा १५ ।

तव माया[1] का पार न वारा ॥ १४ ॥

जो नित तुमरी-महिमा गावे ।

चार[2] पदारथ सहज ही पावे ॥ १५ ॥

वेद विहित[3] करमन रखवारे ६६ ।

सब के बिगड़े काज सँवारे ॥ १६ ॥

सो तुमरी महिमा को जानै ।

जो तुमको हर ठौर पिछाने ॥ १७ ॥

तुम स्वामी हम दास तुम्हारे ।

धन बल धाम औ कोष हमारे ॥ १८ ॥

---

१. मोह पैदा करनेवाली ईश्वर की शक्ति।
२. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। ३. बताये हुए।

पूरन ब्रह्म [६७] अखंड[१] [६८] पुरातन[२] [६९] ।
पुरुषोत्तम[३] [७०] अखिलेश[४] [७१] सनातन[५] [७२] ॥१९॥
ब्रह्मादिक तुमरो गुन गावें ।
नारद शारद तुमको ध्यावें ॥२०॥
देव असुर कुछ भेद न पावें ।
यद्यपि ध्यानी ध्यान लगावें ॥२१॥
शेष महेश गणेश भवानी ।
तुमरो यश को सकत बखानी ॥२२॥
तुम बिन और न दूजा रक्षक ।
जीव[६] जीव का जीव है भक्षक ॥२३॥
जीव[७] जन्तु[८] को तुमरी आशा ।
तुम बिन जग की कटै न पाशा[९] ॥२४॥

१. जिसके टुकड़े न हो सकें । २. सबसे पुराना । ३. पुरुषों में श्रेष्ठ । ४. सब के मालिक । ५. सदा से रहनेवाले । ६. प्राणी तो प्राणी ही के प्राण का खानेवाला है । ७. प्राणी । ८. कीड़े-मकोड़े । ९. बंधन ।

॥ दोहा ॥

तुमरो नाम जहाज़ है,
सृष्टि - समुद्र अपार ।
तुमरी करुणा के बिना
किस बिधि हों हम पार ॥ ४ ॥

तुम हो अगम अछेद[1][७३] अभङ्गम्[2][७४] ।
निरालम्ब[3][७५]जगदीश[७६]महेशम्[4][७७] ॥ २५ ॥
तुमरो भेद न जाने कोई ।
जो जाने सो तुमही होई ॥ २६ ॥

---

१. न कटने और न छेदा जानेवाला ।
२. न टूटनेवाला । ३. बिना किसी के सहारे ।
४. सबसे बड़े मालिक ।

ज्ञान विवेक और जप तप संयम[1]।
संन्यासी और योगी जंगम[2] ।। २७ ।।
महिमा जान न सके तुम्हारी।
ध्यान लगाय गये सब हारी ।। २८ ।।
तव माया को क्या कोई जानै।
जो जाने सो अचरज मानै ।। २९ ।।
अमल अपार अटूट अनूपम[3] ७६ ।
बीज मात्र ८० सूक्षम से सूक्षम ८१ ।। ३० ।।
जल थल[4] अग्नि पवन आकाशा।
रवि शशि सब तव जोति प्रकाशा ।। ३१ ।।

---

१. आचार-विचार के क़ायदे। २. एक प्रकार के जोगी जो डमरू बजाकर श्रीमहादेवजी का ब्याह गाते फिरते हैं। ३. बेमिसाल, जिसकी तरह का कोई दूसरा न हो। ४ जमीन, पृथ्वी।

जीवन मरण रहित इकरस[१] ही [८२] ।
जापर कृपा मिलो तुम तस ही ॥ ३२ ॥

मित्र अमित्र रहित [८३] सबठाँईं[२] [८४] ।
सब के पोषक सब के साँईं ॥ ३३ ॥

दयावान[८५] भगवान [८६] गुसाँईं[३] [८७] ।
तुमरी कृपा से दूर कछु नाँईं ॥ ३४ ॥

ज्ञान[४]-शील [८८] अज्ञान विनाशक [८९] ।
विद्वद्जन हिरदय परकाशक [९०] ॥ ३५ ॥

तुमरो नाम रूप नहिं कोई ।
तुम बिन नाम रूप नहिं होई ॥ ३६ ॥

---

१. निरन्तर एक ही भावना । २. सभी जगहों में रहनेवाले । ३. मालिक । ४. स्वभाव ही से ज्ञानी ।

॥ दोहा ॥

भेद[1] खेद[2] को छेद कर
भ्रम सागर तर जाय।
करुणा दृष्टी आप की,
रञ्चक जो हो जाय ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

क्या कोई तुमरी महिमा गावे।
किञ्चित भेद लखा नहिं जावे ॥ ३७ ॥
जापर कृपा तुम्हारी होवे।
चादर[3] तान अटारी सोवे ॥ ३८ ॥
दुर्गम सुगम होय तत्काला।
जापर हो तुम नाथ ६१ दयाला ॥ ३९ ॥

---

१. अपने-पराये का ख्याल। २. थकावट और निराशा का दुःख। ३. बेफिक्र हो जावे।

सब की लाज तुम्हारे हाथा ।
तुम रक्षक हो सब के नाथा ॥ ४० ॥
सुत दारा धन काम न आवे ।
जब जिवड़ा[१] जमपुर को जावे ॥ ४१ ॥
सब की हो तुम जीवन-बूटी[२] ।
तुम बिन माया-ममता[३] झूठी ॥ ४२ ॥
तुम सब के हो प्राणाधारा [६२] ।
तुम बिन मिथ्या सब ब्योहारा ॥ ४३ ॥
हितकर हो [६३] तुम ही सब केरे ।
वृथा हैं जग के झगड़े[४] झेड़े ॥ ४४ ॥
सम्बन्धी [६४] हो सब के साथा ।
जग का प्रेम है झूठी गाथा ॥ ४५ ॥

---

१. जीव २. जिला देनेवाली ओषधि ।
३. संसार में भ्रम के कारण प्रेम । ४. झंझट ।

कारज सब ही तुम से होयें।
जग के कारज[1] नीर डुबोयें ॥ ४६ ॥
तुम से दृढ़ हो भक्ती ज्ञाना।
हो जग नेह बढ़े अज्ञाना ॥ ४७ ॥
सम्यक्[2] प्रेम तुम्हीं से होये।
जग ममता भ्रम माँहिं डुबोये ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

करो कृपा हे नाथजी,
दीनबन्धु भगवान।
दूर करो सब वेदना,[3]
वेगि[4] करो कल्यान ॥ ६ ॥

---

१. सांसारिक काम मनुष्य को। डुबो देते हैं।
२. पूर्ण और असली। ३. दुःख। ४. शीघ्र।

॥ चौपाई ॥

तुम से दूर होय सब त्रासा[1] ।
भयवर्धक[2] है जग की आसा ॥ ४९ ॥

मङ्गलमय[3] हो परम कृपालू ।
दुख-भंजन और दीनदयालू ॥ ५० ॥
तुम सम ऐसो आन न कोई ।
पाप-पुञ्ज मल नाशै जोई ॥ ५१ ॥
तुम ही पात्र कुपात्र बनाओ ।
मल विक्षेप आवरन नसाओ ॥ ५२ ॥
तुम ही सब की बिथा पहिचानो ।
सब जग की तुम रग रग जानो ॥ ५३ ॥
तुम बिन कोई तुम्हें नहिं पावे ।
तव करुणा तव रूप लखावे ॥ ५४ ॥

---

१. डर । २. डर को बढ़ानेवाली । ३. मंगल रूप ।

पल पल तुम्हें जो सुमिरै स्वामी ।
हो तुम सम वह अन्तरयामी ॥ ५५ ॥
जो तुमरो नित ध्यान लगावे ।
मन वाञ्छित फल निश्चय पावे ॥ ५६ ॥
साधक सिद्ध तुमहिं ते होवे ।
तुम बिन जो पावे सो खोवे ॥ ५७ ॥
तुम बिन सुगम अगम बन जाये ।
तव प्रसाद भव जल तरि जाये ॥ ५८ ॥
घट घट माँहि तुम्हारो बासा ।
करे तव कृपा सकल दुख नासा ॥ ५९ ॥
तुम हो सबसे दूर अरु नेड़े ।
बिन तव कृपा न मिटें बखेड़े ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

तुम बिन सगरे हैं बृथा,
सुत दारा धंन धाम ।

अन्त समय छुट जायँगे
गाम नाम अरु धाम ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥

जो तुम से निज नाता जोड़ै।
बाग[१] सकल विषयन से मोड़ै ॥ ६१ ॥
मथ के वेद पुराण ये जाना।
तुमरी कृपा बिन होय न ज्ञाना ॥ ६२ ॥
तुम बिन और न दूजा कोई।
दूर करे सब ब्याधी जोई ॥ ६३ ॥
हो तुम सकल दुःख के हर्ता।
कष्ट निवारक [६५] मङ्गल-कर्ता ॥ ६४ ॥
सबकी आप करो प्रतिपाला।
आर्त-बन्धु[२] [६६] हो दीनदयाला ॥ ६५ ॥

---

१. लगाम। २. पीड़ितों के सहायक।

मित्र नहीं तुम सम को जग में।
रक्षक तुम सम को है मग में॥ ६६ ॥
जापर होय तुम्हारी दाया।
सहज मिटे वाकी मोह-माया[1]॥ ६७ ॥
भक्त सन्त तुम बिन नहिं होये।
तुम बिन मूँड़ पकड़ जग रोये॥ ६८ ॥
तुम बिन होय नहीं अघनाशा[2]।
तुम बिन मिटै न तृष्णा आशा॥ ६९ ॥
सकल बिकार तुम्हीं ते जायें।
तुम बिन पद-निर्वाण[3] न पायें॥ ७० ॥
ज्ञान विराग भक्ति और योगा।
धन और धाम सकल रस भोगा॥ ७१ ॥
तुम बिन बृथा है जप तप पूजा।
तुम सम पूज्य देव नहिं दूजा॥ ७२ ॥

---

१. सांसारिक प्रेम और बंधन। २. पापों का नाश ३. मोक्ष, मुक्ति।

॥ दोहा ॥

थाह तुम्हारी मेहर[1] की,
दयासिन्धु[१७] कुछ नाहिं ।
आवे जो तुम्हरी शरण,
पार होय छिन माहिं ॥ ८ ॥

॥ चौपाई ॥

तुम बिन आन देव जिन माना ।
ताका होय नहीं कल्याना ॥ ७३ ॥
तुम बिन टुटै न माया-ग्रन्थी[2] ।
पहुँचे न तुम बिन निज गृह पंथी ॥ ७४ ॥
तुम हो अभय-दान के दाता[१८] ।
तुम हो भ्रम-सागर के त्राता[१९] ॥ ७५ ॥

---

१. कृपा । २. माया की गाँठ—
जड़ चेतनै ग्रंथि परि गई ।
जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥ तुलसीदास

तुमरी भक्ति बिन ज्ञान न होये ।
तुम बिन जन्म अकारथ खोये ॥ ७६ ॥
जन्म मरन भय मिटे न ताका ।
तुम से मन नहिं लागा जाका ॥ ७७ ॥
तुम बिन सकल दृष्टि जो आवे ।
निश्चय भस्मिभूत[१] हो जावे ॥ ७८ ॥
तुम हो आदि मध्य अरु अन्ता[१००] ।
तुमही हो सब के भगवन्ता ॥ ७९ ॥
तुम बिन होय नहीं कल्याणा ।
गायें तुम्हें सब वेद पुराणा ॥ ८० ॥
डाल पात सम सब संसारा ।
तुम सब के हो मूलाधारा[२] [१०१] ॥ ८१ ॥
तुम से दृढ़ हो जाकी प्रीती ।
वाकी तुम जैसी हो रीती ॥ ८२ ॥

---

१. जलकर राख । २. जड़ सहारा ।

वाको दुख दे सकत न कोई ।
जापर कृपा तुम्हारी होई ॥ ८३ ॥
अचल भक्ति जाकी तुम माँहीं ।
ताहि खेद अरु भय कछु नाहीं ॥ ८४ ॥

॥ दोहा ॥

अघ नाशक [१०२] पावन करन [१०३]
ऋद्धि सिद्धि आधार [१०४] ।
मोह ममता भेदक[१] [१०५] प्रभू [१०६],
ज्ञान पुञ्ज[२] [१०७] करतार ॥ ९ ॥
दीनबन्धु[३] परमात्मा,
परम-पुरुष [१०८] जगदीश ।
रोम रोम में रम रहे
हो तुम सब के ईश ॥१०॥

---

१. काटनेवाले । २. समूह, राशि । ३. आदि पुरुष

ॐ

भजन-विभाग

[१]

श्रवण मनन निदिध्यासन कारन।
मल विक्षेप आवरण निवारन॥
जो अभ्यास करे ये निस दिन।
सो नर निश्चय मिलत निरंजन॥
'शाहनशाह' त्रिगुणात्मक माया।
तरे न काहू इन तीनन बिन॥

[२]

गुरु बिन भेद न पावे हरि का (टेक)
वा बिन कूकरवत तू डोले, दर का रहे न घर का॥
इतउत बिरथा भरमत मूरख, ज्यूँ पंछी बिन पर का।
गुरु बिन आन न कोई सहाई,या जग में है नरका॥
रो के दिन सो रैन गँवाई, आँख खोल भया तड़का।
'शाहनशाह'इक घर न करे जो,मँगताहै दर-दर का॥

[३]

भैरव—तीन ताल

जागो रे मनुवा ।

अन्तरा०—क्या सोवत अजगरवत है तू;
वधिक गह्यो धनुवा ॥जागो०॥
पाले प्रभू को करके निछावर;
तन मन अरु धनवा ॥जागो०॥
'शाहनशाह' नित नाम जो सुमरै,
फिर जायँ तेरे दिनवा ॥जागो०॥

[४]

टोड़ी—तीन ताल

हर हर जप नित मोरे मना ;
छोड़ वृथा बक बक करना ।

अन्तरा०—भटक भटक माया के कारन
पाय रहा है कष्ट घना ॥हर हर०॥

पल पल तेरो औसर बीतै ;
कर ले अबहीं जो करना ॥ हर हर० ॥
भ्रम का जाल जगत है सारा ;
काँटा है आशा तृष्णा ॥ हर हर० ॥
जबलौं दिव्य दृष्टि नहिं पावै ;
दूर न हो जग की भ्रमना ॥ हर हर० ॥
'शाहन्शाह' कर याद प्रभू को ;
वा बिन तेरो है को अपना ॥ हर हर० ॥

[५]

चेतावनी—बतर्ज़—कहीं न कहीं

यह जन्म तुझे अनमोल मिला,
बरबाद न कर बरबाद न कर।
कुछ नेक अमल कर, हरि को सुमर,
उत्पात न कर, उत्पात न कर॥
यह दुःख जो तुझको मिलता है,
निज कर्म का लेखा चुकता है।
जो पहिले दिया वही लेता है,
फ़र्याद न कर, फ़र्याद न कर॥

तू झुककर चलना सीख यहाँ,
दो दिन रहना फिर चलना वहाँ।
कुछ दया धर्म कर ऐ नादाँ!
बेदाद[1] न कर, बेदाद न कर॥
मत ज़ुल्मोसितम पर बाँध कमर,
डर राम से डर, डर राम से डर।
पये-क़त्ले ग़रीबाँ[2] तू तेज़ तबर[3],
जल्लाद न, कर जल्लाद न कर॥
जिस दिल में हरि का न चर्चा हो,
उसको वीराना रहने दे।
इस नफ़्स[4]-परस्ति की बस्ती को
आबाद न कर, आबाद न कर॥
हमें प्रेम नगरिया में रहने दे,
कुछ सुनने दे, कुछ कहने दे।
इस प्रेम जाल के पिंजरे से
आज़ाद न कर, आज़ाद न कर॥

१—ज़ुल्म। २—ग़रीबों के क़त्ल के वास्ते।
३—फरसा। ४—विषयों का राग, विलासिता।

ऐ 'शाहनशाह' इस दुनियाँ में
समझाना और को मुश्किल है।
चुप हो रह जो तू समझा है,
बकवाद न कर, बकवाद न कर ॥

[६]

असावरी -- तीन ताल

कौन उपाय मिलें भगवाना।
अन्तरा—ना कीन्हीं कुछ सेवा पूजा।
ना कीनो जप तप व्रत दाना ॥
सारी उमर खाया और खेला।
या सोया या गाया गाना ॥
स्वारथ वश निज जीवन खोया।
नित्य रचा मिथ्या अभिमाना ॥
नित्य रहा विषया रस माता।
कार्य किया नित ही मन माना ॥
'शाहनशाह' अब हरि करुना बिन
किस विधि तेरो हो कल्याना ॥

[७]

प्रार्थना

जगदीश ईश प्यारे, नैनों में मेरे आ जा।
प्राणों में मेरे बस जा, तन में मेरे समा जा॥
छुप छुप के तीर मारे, है क्यों मेरे बहादुर।
देखें बहादुरी हम, टुक सामने तो आ जा॥
सुपने में आके जलवा, दिखलाना कब रवा है।
आँखों से मेरी आँखें, अपनी ज़रा मिला जा॥
बिरहे में तेरे प्यारे, है दम लबों पे आया।
या अर्श पर चढ़ा जा, या फ़र्श में बिछा जा॥
अरशे-वरीं[1] से बेहतर, है खाके-पा[2] तुम्हारी।
आ इसको कर[3] से अपने, आँखों में तू लगा जा॥
हमसे तो अब 'शहनशाह', तुझ बिन है जीना मुश्किल।
मरने से पहिले प्यारे, मुखड़ा हमें दिखा जा॥

१—ऊँचा आकाश। २—चरणों की धूल। ३—हाथ।

[८]

भजन राग भैरवी ताल ३

प्रभु कैसे तुम्हें हम पायें ॥ टेक ॥

भक्ति न जोग न तप नहीं संयम ।
किस विध तुम तक आयें ॥ प्रभु...
जप तप पूजा पाठ न जानें ।
नहीं भभूत रमायें ॥ प्रभु...
तुम बिन और न हमको सूझत ,
जाको बिथा सुनायें ॥ प्रभु...
तू ही प्यारे हमको बता दे ,
किस बिधि तेरे मन भायें ॥ प्रभु...
सद् मारग में पग नहिं दीना,
सन्मुख कैसे आयें ॥ प्रभु...
कर्म किये सब औघट हमने ,
मुँह कैसे तोहे दिखायें ॥ प्रभु...
'शहन्शाह हो आप दयालू ।
हमको आप निबायें ॥ प्रभु...

[६]

कहाँ हूँ कहाँ नहीं।

मंदिर में घर में दर में, कहाँ हूँ कहाँ नहीं।
तुझको मैं क्या बताऊँ, कहाँ हूँ कहाँ नहीं॥
नस नस में बसा हूँ, हर इक ज़र्रे में रमा।
आँखों में दिल में सर में, कहाँ हूँ कहाँ नहीं॥
ख़ुद तेरा है इक़बाल, रमा हूँ मैं बाल बाल।
तू ही बता दे अब मैं, कहाँ हूँ कहाँ नहीं॥
मेरी तलाश तुझको, बहाना है रिया है।
अब फिर से देख भाल, कहाँ हूँ कहाँ नहीं॥
अनहद की सदा गूँज, रही है यहाँ वहाँ।
बँसिया बजाता अपनी कहाँ हूँ कहाँ नहीं॥
बे फ़ायदा तलाश है, गर है ख़ुदी की बू।
अपने ही दिल में देख, कहाँ हूँ कहाँ नहीं॥
हर तन में हूँ मैं जान, हर इक जान में हूँ रूह।
कहता है क्या "शहन्शाह" कहाँ हूँ कहाँ नहीं॥

[१०]

सदा दिल जो उससे लगाता रहेगा।
तो वह भी तुझे दिल से चहता रहेगा॥
जो दुनियाँ में दिल को फँसाता रहेगा।
तो उसको भी फिर वह भुलाता रहेगा॥
जो तू मन भजन में लगाता रहेगा।
तो वह भी तेरे गीत गाता रहेगा॥
रहेगी बसी हक़[1] की सूरत जो दिल में।
तो दिल में वह तुझको बसाता रहेगा॥
जो तोड़ेगा तू सबसे रिश्ते व नाते।
फ़क़त उससे ही तेरा नाता रहेगा॥
जो जीते जी जग से किया ना किनारा।
तो मरके भीं तू गोते खाता रहेगा॥
बसाये 'शहनशाह' जो तू घर में उसको।
तो वह भी तेरा घर बसाता रहेगा॥

१—सत्य-स्वरूप।

[११]

डरते किस वास्ते हो, राम भजो राम भजो।
सोच और फ़िक्र तजो, राम भजो राम भजो॥
काम जो नेक हो फल नेक हुआ करता है।
होवे अच्छे का बुरा! राम भजो राम भजो॥
होता है खोटा नतीजा बुरे कर्मों का मुदाम[१]।
बद को सुख मिलता है कब, राम भजो राम भजो॥
मुल्क आख़िर न रहे, जाँ न रहे, ज़र न रहे।
इनसे दिल अपना हटा, राम भजो राम भजो॥
सुखकी और दुखकी सभी, रामसे तुम अपने कहो।
और क्या जाने दवा, राम भजो राम भजो॥
जब भरोसा ही तेरा राम पे है, फ़िक्र है क्या ?
बिगड़ी बन जायगी सब, राम भजो राम भजो॥
काम दुनिया का करो, डोरी मगर राम से हो।
झूठ और मक्र तजो, राम भजो राम भजो॥
ऐ 'शहनशाह' न हुआ दुनिया से सच्चा बंदा।
सच्चे ईश्वर से रहो, राम भजो राम भजो॥

१—सदा।

[१२]

बातों बातों में तेरा वक़्त चला जाता है।
एक दिन आता है और एक चला जाता है॥
करता है काम जो तू, उससे ख़बरदार रहे।
नामा-आमाल[1] बशर! तेरा लिखा जाता है॥
अपने मतलब से करें, तुझ से मुहब्बत सारे।
झूठा रिश्ता है यहाँ झूठा ही सब नाता है॥
होता मुम्ताज़[2] है वह, बात जो माने सच्ची।
जो सुने बात न वह मुँह की सदा खाता है॥
हक़ को जो चाहेगा तो हक़ भी सदा चाहे उसे।
हक़ को नाहक़ भी कहीं मूढ़ कभी पाता है॥
ज़िन्दाजावैद[3] 'शहनशाह' है हमेशा वह बशर।
जीते जी दुनियाँ में जो जी से गुज़र जाता है॥

१—कर्मों का लेखा। २—सकल, श्रेष्ठ। ३—अमर।

[१३]

ताबके[१] दुनिया की दौलत ताबके,
ताबके उक़बा,[२] उक़बा की चाहत[३] ताबके।
डर ख़ुदा और बेकसों की आह से,
ज़ालिमो ज़ोरो हुकूमत ताबके॥
हर क़दम पर मौत दामनगीर[४] है,
है तेरी लुक़मान[५] हिकमत ताबके॥
ख़ूबसीरत[६] बन, न सूरत को बना,
नक़्श[७] पानी की है सूरत ताबके॥
ख़ालो-ख़त[८] बुनियाद कुछ रखते नहीं,
कच्ची मिट्टी की है मूरत ताबके।
लमहा लमहा कर ख़ुदा की याद तू,
दुनिया की नफ़रत व रग़बत[९] ताबके।
ऐ 'शहनशाह' दिल से तू ख़ाहिश मिटा,
आबे शबनम[१०] से तरावत[११] ताबके॥

१—कब तक। २—बैकुण्ठ। ३—इच्छा। ४—साथ। ५—फ़ारस का प्रसिद्ध हकीम। ६—अच्छे गुणोंवाला। ७—चिन्ह। ८—रूप रेखा। ९—मोह। १०—ओस का पानी। ११—तृप्ति।

[१४]

मरने से पहिले अगर मरना तुझे आ जायेगा।
फिर हमेशा के लिए तू ज़िन्दगी पा जायेगा॥
इस जहाँ में आके गर तू और को कलपायेगा।
याद रख तू भी नहीं भूले से याँ कल पायेगा॥
कुछ न गर तू काम का अपने नतीजा चाहेगा।
फिर ख़ुदा हक़ में तेरे हाँ बाख़ुदा हो जायगा॥
ख़ौफ़ से मरने के नादाँ बचता फिरता है अबस[1]।
ख़ौफ़ ही बनकर अजल[2] तुझको हड़प कर जायेगा॥
हुस्न पर है अपने नाज़ाँ[3], पर ख़ज़ाँ जब आयेगी।
ख़ार सा खटकेगा तू, यह फूल मुरझा जायेगा॥
कामकी और नामकी ख़ाहिश को अपना दाम[4] जान।
फँस गया गर इसमें तो आख़िर बहुत घबरायेगा॥
काम दामो नाम सब मिट जायेंगे ऐ बेशऊर!
आख़िरश याँ जानमन, बस राम ही रह जायेगा॥
फ़ेलों की स्याही के रुख़ से बदनुमा धब्बे मिटा।
हाकिमे आला को जा के क्या तू मुँह दिखलायेगा॥

१—वृथा। २—मृत्यु। ३—इतरानेवाला। ४—जाल।

फिरता क्या इतराता है तू जिस्म पर ऐ बेवक़ूफ़ ।
मिट्टी का पुतला है आख़िर मिट्टी में मिल जायेगा ॥
किस के ग़म में रात दिन रोता फिरता है बशर !
क्या तू ले के आया था क्या याँ से ले के जायेगा ॥
गर किया ना काम तू ने, आया था जिसके लिये ।
[1]वक़्ते-रफ़्तन सरको धुनता हाथ मलता जायेगा ॥
गर ना जाना ज़िन्दगी में तैरने का कुछ हुनर ।
बहरे[2] बे-पायाँ[3] में पड़ के फिर तू ग़ोते खायेगा ॥
गरचे मर जाने से पहले, मरना तू समझा नहीं ।
जब क़ज़ा[4] आवेगी तो, मुँह ताकता रह जायेगा ॥
कर ले नेकी ऐ बशर ! जब तक है तेरे दम में दम ।
बात ही रह जायेगी और वक़्त तो टल जायेगा ॥
ऐ "शहनशाह" ख़ाहिशों का ख़ातमा बिलख़ैर[5] कर ।
वरना याँ से जा के आना तुझको फिर पड़ जायेगा ॥

१—मृत्यु के समय । २—समुद्र । ३—अथाह ।
४—मृत्यु । ५—प्रसन्नता पूर्वक ।

[१५]

जिस जा कि हमने देखा, तुझको वहीं है देखा।
गोया कि हर जगह पर तुझको रमा ही देखा॥
काबा तेरा मकाँ है, बुतख़ाना[१] तेरा घर है।
हर मंदिरो शिवाला तेरी पनाह[२] ही देखा॥
मस्जिद व गुरुदुआरे हैं तेरे ही ठिकाने।
गंगा के तट के ऊपर तुझको खड़ा ही देखा॥
गिरजे में हम गये जो, तुझको वहाँ भी पाया।
और वाँ से घर जो आये, तुझको वहाँ भी देखा॥
सब परवतों के ऊपर हिम[३] सा तू जम रहा है।
सब तुरबतों[४] के अन्दर तुझको निहाँ[५] ही देखा॥
सब महफ़िलों में तू है, सब जमघटों में तू है।
और मैक़दों[६] में डेरा तेरा जमा ही देखा॥
वेदों में तू है हाज़िर, क़ुरआँ है तेरा शाहिद[७]।
अंजील में भी हमने तुझको छिपा ही देखा॥
तू है 'शहनशाह' तागा, और ज़र्रा ज़र्रा दाना।
हर देवता के सर पर तुझको चढ़ा ही देखा॥

१—मंदिर, मूर्तिस्थान। २—ठिकाना। ३—बर्फ़। ४—क़ब्र। ५—छिपा। ६—शराबघर। ७—गवाह।

[१६]

पीर बिन हरी न जाये पीर ।। टेक ।।

जब जब भीर पड़ी भगतन पर,
तब तब धर्‍यो शरीर । पीर०
कष्ट पड़ा जब द्रुपद-सुता पर,
आय बने प्रभु चीर ।
जब अतिशय दुख सिया ने पाया,
लंक चढ़े रघुबीर ।। १ ।।
गज पर आन बनी जब जल में,
झट पहुँचे जल तीर ।
ऐसो को तन-धारी जग में,
पड़ी न जिस पर भीर ।। २ ।।
ऐसो को प्रेमी पुन बीतो,
हरी न जाकी पीर ।
खता खाये बिन कभी न माने,
यह मनुवा बे पीर ।। ३ ।।
बनी न काहू की फूटे बिन,
बैरन यह तक़दीर ।
'शहनशाह' संकट सब सह कर
रहो सदा गम्भीर ।। ४ ।।

[१७]

हे प्रभू हम पर दया अब कीजिये।
मन के सारे पापों को हर लीजिये ॥ १ ॥

मन के सागर में बहे जाते हैं हम।
करुणा करके पार इससे कीजिये ॥ २ ॥

मन सदा निर्लेप विषयों से रहे।
भक्ति और विश्वास हमको दीजिये ॥ ३ ॥

मान मद संताप सब जाते रहें।
शान्ति और संतोष हमको दीजिये ॥ ४ ॥

दूर हो माया का मन से आसरा।
हे प्रभू अपनी शरण में लीजिये ॥ ५ ॥

तुम से ही रिश्ता रहे नाता रहे।
और सब आशाएँ हरि हर लीजिये ॥ ६ ॥

हों 'शहनशाह' रंक सब यकसाँ हमें।
ऐसी समता दान हमको कीजिये ॥ ७ ॥

[१८]

हरदम मगन रहो रे भाई,
जैसे चलै लो चलाई ॥
मित्र वंधु और अपना तन सव ;
हैं ये वस्तु पराई ॥ जैसे०
निज मतलब के सब साथी हैं,
तेरा न संगी काई ॥ जैसे०
हृदय मँडल में ज्ञान का झाड़ू
देकर करो सफ़ाई ॥ जैसे०
जो होना है हो के रहेगा ;
घटे वढ़े न राई ॥ जैसे०
खो दो सव कुछ तुम 'शाहनशाह',
चाहो जो वस्तू पाई ॥ जैसे०
स्वारथ तज के पदारथ पाओ,
आन तजो चतुराई ॥ जैसे०

[१६]

हम ऐसे देस के वासी हैं
जहाँ जाके न आना रहता है।
जहाँ ज्योतिर्मय इक सागर है
और आनंद दरिया बहता है।
यहाँ जाति का भेद नहीं रहता
भय भ्रम का खेद नहीं रहता।
क़ुरआन और वेद नहीं रहता,
कोई सुनता है ना कहता है।
यहाँ पूछताँछ की जा ही नहीं
जो आया फिर वो गया ही नहीं।
इक बार जिया सो मरा ही नहीं,
ना देता है न गहाता है।
यहाँ जागे न कोई सोता है,
ना हँसता है ना रोता है।

सुख से वह दुखी नहीं होता है,
दुख आप वो सुख से सहता है।
यहाँ सारे रंक शहन्शाह हैं,
निरधन सब याँ वे परवा हैं।
सब चिंता-रहित हैं वे चाही
निर्द्वन्द्वता है निर्भयता है।

---

[२०]

एक ताल गौड़ सारंग

बम बम बम नटवर।
कर त्रिशूल डमरू धर,
देवेश्वर असुरेश्वर।
सर्व देवासुर पति,
मुक्तिनाथ रामेश्वर।
करन कारन हर हर। शाहन्शाह नरवर।
कालेश्वर सतिवर वागेश्वर। करुना कर।

---

[२१]

असावरी—तीन ताल

प्रभु तुम बिन कौन हमारो है।
तन मन धन तुम पर वारो है॥ १॥

तुम बिन हमको कुछ न सोहाये।
तू प्राणों से प्यारो है॥ २॥

हमको तुम बिन कछु ना दीसत।
चारो ओर अँधियारो है॥ ३॥

तेरे बिना हमको जगमाहीं।
आन न कोई सहारो है॥ ४॥

जीवन नैया का तूही खेवट।
पार लगावन हारो है॥ ५॥

शाहन्शाह जप नाम प्रभू को।
वाही प्राण अधारो है॥ ६॥

[२२]

काहे धरत नहिं धीर मनुवाँ ?

हरको भज और सुकृत करले, काहे होत अधीर ॥

कर्म किये विन कबहुँ न होवे मँझधारे से तीर ।

अंतर बाहर हर का बासा जानै सब की पीर ॥

कर्म करै अहंकार रहित हो सबसे बड़ तदबीर ।

रंका, बंका, गणिका, सदना, तरे रैदास-कबीर ॥

तू भी जो भव तरना चाहे, पकड़ ले यही लकीर ।

शाहन्शाह बस वार प्रभू पै धन,मन और शरीर ॥

---

[२३]

ललित - तीन ताल

एक पल भर सुख नींद न सोया ;

बीत गई सब सोवत सोवत ।

इक दमड़ी कुछ काम न आई ;
चमड़ी उड़ी धन ढोवत ढोवत।
इक दाना कभी काम न आया ;
आयु गई सब बोवत बोवत।
शाहन्शाह चेते जो सवेरे ;
बाट कटै दिन होवत होवत।

---

[२४]

सवाई

कहाँ है राम अपना लो तुम्हें अब हम बताते हैं ;
है अंदर हाल जो अपने उसे अब लब पे लाते हैं।
जो रहता है हमेशा राज़ की सूरत फ़क़ीरों में ;
शाहन्शाह देखो तुमको बर्मला अब हम दिखाते हैं।
किसी का राम काशी में किसी का है मदीने में ;
बुतों में है किसी का, देख लो अब हम दिखाते हैं।
कोई कहता गया में है, कोई कहता योरोशल में ;
शाहन्शाह राम अपना या तो हरजा मन में पाते हैं।

[२५]

राग मेलहार।

स्थायी—निस दिन तरसत नैन हमारे
दरसन बिन प्रीतम प्यारे।

अंतरा—ना जानै प्रभु कबहुँ मिलौगे
तन से प्रान भये न्यारे।

रैन भई आँधी झुकि आई
बरसत बादर कारे।

इक पल-पल का झपकत नाहीं
हरदम रहत उघारे।

सब प्रेम तुम करे औरन से
हमसे रहत उघारे।

शहन्शाह है ग़रज़ कौन की
डूबत नाव उबारे।

हर सो नाहिं चले चतुराई।
जा चतुराई के तू कारन चाहत मान बड़ाई।
वाही के कारन नित मूरख होवत लोग हँसाई।

जो तू निश्चय जग के भीतर चाहत है बड़ियाई।
भले ही तू परबत सम होवे निज को समझ तू राई।
शहन्शाह सत्प्रेम के माँही सम है छोट बड़ाई।
जो करना है अब ही कर ले फिर ये औसर नाई।

ठुमरी भैरवी—समय प्रातः

भजो रे मन, राम नाम सुखदाई।
बिन हरिभजन मुक्ति नहिं होवे,
लाखों करो उपाई॥ भजो०
सुमरि सुमरि नर हरि हर निशदिन,
छोड़ के सब चतुराई॥ भजो०
मोती जन्म तू पाकर मूरख,
काहे को आब गवाँई॥ भजो०
पाप कर्म तू कर कर बन्दे,
मत कर लोग हँसाई॥ भजो०
काहे भटकत माया के कारण,
माया न होत सहाई॥ भजो०
सत हित सब कुछ वार के प्यारे,
कर ले सफल कमाई॥ भजो०

छल और कपट जो तज दे 'रंक' तू,
पावे शाहन्शाही ॥ भजो०
भूल जा सब कुछ आपे सहित तू,
राम से लौ को लगाई ॥ भजो०

राग भैरवी—समय प्रातः

रे मन, अपनो भवन सँवार ।
तोंको क्या औरन सँग लागे,
सब अपने मुख़्तयार ॥ रे मन०
जो जो करम करे या जग में,
सो सो भोगनहार ॥ रे मन०
औरन को तू क्या समझावे,
अपनो आप सँभार ॥ रे मन०
तोरे समझे सब जग समझे,
सब में जगदाधार ॥ रे मन०
संगी साथी दूर रहेंगे,
खायेगा जब मार ॥ रे मन०
निज मतलब के हैं सब साथी,
देख ले सोच - विचार ॥ रे मन०

सिमर सिमर सब पार उतर गये,
तू डूबत मँझधार ॥ रे मन०
रंक 'शहन्शाह' जो तू समझे,
तो है मौज बहार ॥ रे मन०

[२६]

राग–आसावरी समय–प्रातः

मन, चेत चेत अब चेत ।
तेरे चेते सब जग चेने,
तू काहे भयो अचेत ॥ मन चेत०
दादू चेते, मीरा चेती,
सदन गयो है चेत ॥ मन चेत०
फिर पाछे पछतायेगा,
जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत ॥ मन चेत०
सारी उमरिया विरथा खोई,
कीनो न हरि से हेत ॥ मन चेत०
सुख दुख सब करमों वश होवे,
का काहे को देत ॥ मन चेत०

मीत अमीत को संग न जावे,
जब तू चढ़े जनेत ।। मन चेत०
रंक 'शहन्शाह' जो जितना दे,
उतना ही वो लेत ।। मन चेत०

[३०]

राग–पीलू समय–तीसरा पहर

मन, आजा हरि शरणाई ।
जीव कहे मन से सुन भाई,
हम तुम करें मिताई । मन०
अबलौं जो तुम कीनो भुगतो,
छोड़ो सब चतुराई । मन०
तुमरो मंत्र बहुत हम माना,
अब तुम लो ससताई । मन०
हम जो कहें करो तुम अब से,
मत तुम करो ढिठाई । मन०
बाग तुम्हारे हाथ दिये से
बहुत सजा हम पाई । मन०
जो तुम सीख 'शहन्शाह' मानो,
बिगड़ी बन जाई । मन०

[३१]

राग खमाच

साधो जग दर्शन का मेला ।
व्याज के कारन मूल गँवाया,
काम न आया धेला ॥ साधो०
मेले में तो ख़ूब है रौनक़,
जावे फिर तू अकेला ॥ साधो०
जब मेला यह बिनस जायेगा,
ना वो गुरू न चेला ॥ साधो०
कर ले सौदा जो जो करना है,
ख़र्च के पैसा धेला ॥ साधो०
मेले में कर मेल तू सब से,
नातर देख न मेला ॥ साधो०
चौरस बाज़ी बिछी हुई है,
सोच समझ जो खेला ॥ साधो०
तो यह बाज़ी जीत के जावे,
नहीं तो पड़े झमेला ॥ साधो०

मेले में तो मेली बहुत हैं,
कोई गुरू कोई चेला ॥ साधो०
'शहन्शाह' है सबसे न्यारा,
ना वो गुरू न चेला ॥ साधो०

---

[३२]

इस भजन के गान और पाठ से निर्द्वन्द्वावस्था में स्थिति होती है।

न सुख को है क़रार न दुख को क़रार है।
जो चीज़ है दुनिया में सो वह बेक़रार है॥
इस घर में चार आये चार उठ खड़े हुए।
जाने यह कब से तार यहाँ बरक़रार है॥
हैं सब सवार कश्तिये उम्रे रवाँ में याँ।
आता है कोई वार कोई जाता पार है॥
इस तख़्तए हस्ती पै है चौसर बिछी हुई।
होती है कहीं जीत कहीं होती हार है॥

बीन तेरी अबस ऐ सिकन्दरा !
यह दुनिया तो इक बहरे नापैदा किनारा है ॥
उड़ते हैं कहीं चैचहे, नाले कहीं मचे।
वीराना है कहीं याँ कहीं लालाज़ार है ॥
मशहर कहीं बपा है कहीं शादी की है धूम।
बस्ती कहीं ख़िज़ाँ है कहीं पुर बहार है ॥
पढ़ते कहीं क़सीदे कहीं मरसिये पढ़ें।
सद रहमतें कहीं हैं कहीं मार मार है ॥
इस गुलशने-हस्ती में कहीं गुल हैं कहीं ख़ार।
होता है शाद कोई कोई सोगवार है ॥
जब है यही दस्तूर तो फिर ग़म में क्यों मरें।
गुज़रे ख़िज़ाँ है वाँ पै जाँ आती बहार है ॥
जीकर है कोई ख़श कोई मरने का ग़म करे।
लेकिन हमें तो यार इन दोनों से आर है ॥
रंजो अलम बेसूद है तेरा ऐ 'शहन्शाह'।
ग़म होते हैं उन्हें जिन्हें ख़ुशियों से प्यार है ॥

आरती

स्था०—ओ३म् जै हरता करता, हरी ओ३म् ॥

अन्त०—तुम हो दीनदयाला, अरु अन्तर्यामी ।
घट घट में हो व्यापक,होसबके स्वामी॥हरीओ३म्॥

तुम हो अलख निरंजन, करुणा के सिन्धू ।
मात पिता तुम हमरे, तुमही हो बंधू ॥हरी ओ३म्॥

हो तुम अगम अगोचर, हम किस बिधि पायें ।
मन बानी से दूर, तुम्हें कैसे ध्यायें ॥हरी ओ३म्॥

व्याप्य है सब कुछ तुममें तुम सब में व्यापक ।
सबसे दूर और नेरे हो सब के नायक ॥हरीओ३म्॥

पहले लखे जो निज को, तब तुमको पावे ।
पहिले तजे जो माया,फिर तुमतक आवे॥हरीओ३म्॥

'रंक' जो चाहे दरशन, आपे को तज दे ।
विना लखे निज रूपा,कबहूँन रूप लखे॥हरीओ३म्॥

तन मन धन सब भेंटे, भरम करम स्वाहा ।
भेद खेद सब छेदें, जै शाहनशाहा ॥हरी ओ३म्॥

ओ३म् जै हरता करता, हरी ओ३म्॥

महात्मा शाहन्शाहजी महाराज

के

आध्यात्मिक ग्रन्थों

का

सूचीपत्र

१६४० ई०

LIST OF

SPRITUAL BOOKS

BY

MAHATMA SHAHANSHAHA JI MAHARAJ

१—मन की कुञ्जी

इस ग्रन्थ का भाव नाम से ही प्रकट है। समस्त संसार को शान्ति तथा आनन्द की खोज है। उसकी प्राप्ति के लिये ही यह कुञ्जी है, जिससे शान्ति मन्दिर का किवाड़ खुलता है और परमानन्द के बहुत ही सुगम मार्ग का पता चलता है। इसमें क्रम से समय का मूल्य, वचन-पालन, विद्या, धन, विषय-सुख, ज्ञान, सच्चा प्रेम, पूर्ण पुरुष, जीव, ब्रह्म आनन्द आदि विषय भली प्रकार से प्रकट किये हैं। काम-क्रोधादि पंच विषयों पर अंकुश, मन के एकाग्र करने के अभ्यास, आसन आदि बातें सरल रूप से वर्णित हैं। अन्त में श्रीमहाराज-जी की भावपूर्ण कुंडलियाँ तथा शाहन्शाही नियम दिये हैं। पंच विषयों के चक्र व आसन-सम्बन्धी चित्र भी दिये हैं। प्रत्येक धार्मिक विचारों व मतों के प्रेमियों के पढ़ने व ग्रहण करने योग्य है।

पुस्तक का आकार २०×३०×१⁄१६, पृष्ठ संख्या ३००, सप्तम संस्करण १९३७ ई०, मूल्य सादी ।॥), सजिल्द १)

पैग़ाम शहन्शाह—मन की कुंजी का उर्दू रूप है। मूल्य ।॥)

२ — भजन-कीर्तन

(समालोचना 'माधुरी' लखनऊ, अगस्त १९३८ ई०)

"इस पुस्तक में महात्माजी के आध्यात्मिक उपदेश परम भावपूर्ण मनोहर भजनों तथा ग़ज़लों द्वारा उत्तम रीति से वर्णन किये गये हैं। इसमें क्रम से कर्म, उपासना, ज्ञान तथा फुटकुल ४ विभाग हैं, जिनमें कुल भजन विभाजित किये हैं। आदि में उनकी वर्ण-अनुक्रमणिका दी है। भजनों के राग-रागनी, गाने का समय, स्वर-विवरण आदि बातें सुचारु रूप से वर्णित हैं। प्राचीन राग-रागनियों के प्रचलित रूपों का वर्णन करते हुए उनके नए नामों का उल्लेख, जिनके उच्चारण से ही उनके स्वरों का परिचय हो जाता है। इस पुस्तक की अपूर्व विशेषता है। आदि में ओ३म् के त्रिमूर्ति का चित्र तथा 'ओ३म् निरूपण' के अ उ म तीन मंत्र-रूपी भजन दिये हैं। अंत में स्वामीजी के वचन व अन्य भक्तों के भजन तथा स्वरों का नक़्शा व फ़ोटो दिये हैं। प्रत्येक वेदांत-प्रेमियों के पठन व मनन करने योग्य है।

पुस्तक का आकार २०×३०=१६ आर्ट पेपर पर

५ फ़ोटो हैं। पृष्ठ-संख्या २५६ सप्तम संस्करण १६३७ ई॰ मूल्य सादी ।।।), सजिल्द १)

काशफ़ुल क़व्वल—भजन-कीर्तन का उर्दू रूप है, जिसमें इसके अधिकांश भजन हैं। मूल्य ।।=)

४—सिहरफ़ी पोयट्री

इसमें शिक्षा और प्रेम का विषय गुरुमुखी पद्य में लिखा गया है। मूल्य -)

फ़ोटो

श्रीमहात्मा शाहन्शाहजी के फ़ोटो भी कई आकार तथा अवस्था के मिलते हैं।

मूल्य "फ़ल साइज़" माउन्ट समेत ।।=) प्रति कापी
मेजिक फ़ोटो १।) प्रति कापी

मिलने का पताः—
शाहन्शाही सर्वहितकारी संघ
पोस्ट बॉक्स नं॰ ४७, लालबाग़ रोड,
लखनऊ (यू॰ पी॰)

कुछ समालोचनाएँ :—

(१) 'लीडर' (अँग्रेज़ी दैनिक), इलाहाबाद—

(अनुवाद)

भजन-कीर्तन— महात्मा शहन्शाहजी के भक्ति-भाव भरे ३०० भजनों का संग्रह है, जो तीन विभागों, १—कर्म, २—उपासना, ३—ज्ञान, में विभाजित है। एक चौथा विभाग है, जिसमें भिन्न २ प्रकारके धार्मिक भजन हैं। सूक्ष्म प्रस्तावना के रूप में अनेक प्रकार के रोगों का वर्णन है, जिनमें ये भजन गाये जाते हैं।

इस ढंग का यह एक प्रशंसनीय संग्रह है।

(२) 'तेज' (उर्दू दैनिक), दिल्ली—

मन की कुंजी— इसमें शाहन्शाहजी महाराज ने

अपने धार्मिक और रूहानी ख़्यालात और उपदेशों को निहायत उम्दा तरीक़े पर बयान फ़रमाया है।

वैराग, भक्ती मार्ग.........दुनियाँ के दुखों से नजात, ईश्वर और आनन्द प्राप्ति के साधन बताये हैं। जिन लोगों को रूहानी शिक्षा की तलाश है इस किताब से बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं।

पैग़ाम शहन्शाह—इसका उर्दू तरजुमा है, जिसके पढ़ने से बड़ा आनन्द मिलता है।...

(३) स्वराज्य (साप्ताहिक), दिल्ली—

'चौरासी छेदन और स्प्रिचुअल डोज़ेज़'—दोनों की दोनों प्रभू प्रेम में डूबी हुई हैं। इन हर दो के मुसन्निफ़ के कलाम में मिठास है। और मिठास भी वह जो इन्सान को ईश्वर में लीन कर दे। ...

(४) 'माधुरी' (हिंदी मासिक), लखनऊ

स्प्रिचुअल डोज़ेज़—यह पुस्तक जिस प्रशंसा के योग्य है, उसका पता इसके पढ़ने से ही चल सकता है। इसमें एक ओर तो अँग्रेज़ी पद्य है, दूसरी ओर

सामने ही उसका उर्दू पद्यानुवाद है जो कि गाने में भी सरलता पूर्वक-आ जाता है। विचारों की ऊँचाई तथा पवित्रता के विषय में तो कहना ही क्या है। एक २ आत्मरस में पगा हुआ है। आध्यात्मिक प्रेमियों के लिये यह एक अमूल्य वस्तु है और नास्तिक लोगों के लिये अमृत जीवन प्राप्त करने का साधन। द्वितीय संस्करण, मूल्य अँग्रेजी पोयट्री ।) उर्दू पद्यानुवाद-सहित ।=)

चौरासी छेदन—इस लघु पुस्तक में ईश्वर-प्रार्थना संबंधी ८४ चौपाइयाँ हैं। तथा कुछ लोकप्रिय भजन हैं। इसकी लोकप्रियता इसी से प्रकट है कि इसका तेरहवाँ संस्करण समाप्त होकर १४वाँ संस्करण छप रहा है। मूल्य-)

(५) स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी दिल्ली—

(सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा—देहली)

'चौरासी छेदन' नाम की लघु पुस्तक पढ़ी। भक्त-जनों के लिए उपयोगी पुस्तक है। अपने पक्ष का वर्णन सरलता-पूर्वक अच्छा किया है।

गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लाटूश रोड
लखनऊ

इसके अतिरिक्त निम्न-लिखित पुस्तकें
इन दो पतों से भी मिलेंगी—

मन की कुंजी या शहन्शाही सन्देश, हिंदी सादी ।।।)
" " " " " सजिल्द १)
मन की कुंजी या पैग़ाम-शहन्शाह, उर्दू ।।।)
भजन कीर्तन—आत्मरस भजनावली हिंदी ।।।)
" " सजिल्द १)
शहन्शाही कुंडलियाँ और भजन, " ।=)
काशफ़ुल लवे 'पद्य भाग' उर्दू ।।।)
शहन्शाही पोयट्री (पद्य) अँगरेज़ी ।)
" " उर्दू (पद्य) अनुवाद सहित ।=)
" सिहर्फ़ी गुरुमुखी -)

पते यह हैं:—

(१) शाहन्शाही सर्व हितकारी संघ
~~पोस्ट बॉक्स नं० ४७ लालबाग-रोड~~, लखनऊ
(२) दरबारचन्द्र ब्रदर्स ऐण्ड को,
कोल मरचेन्ट, श्रीराम-रोड, लखनऊ